लिखवाड़का

प्रिय भाइयों और बहनों,

यह है लिरुवाड़का, एक छोटी सी लेकिन अर्थपूर्ण पुस्तक।

यह तिरानोसेलवाद नामक धर्म के बारे में बताती है, उनके लिए जो इसका पालन करते हैं, और उनके लिए भी जो केवल इसे जानना चाहते हैं।

हम यह हिंदी अनुवाद सम्मानपूर्वक प्रस्तुत करते हैं, इस आशा के साथ कि यह उन सभी तक पहुँचे जो इसमें रुचि रखते हैं।

आपको शांति और शुभकामनाएँ।

अध्याय १

१. ब्रह्मांड कई सदियों पहले आग और अराजकता में जन्मा था। वह उस समय वैसा नहीं था जैसा हम आज उसे जानते हैं।

२. लाखों वर्षों तक वह उबलता और बदलता रहा जब तक कि उसमें से वे सभी चीज़ें उत्पन्न नहीं हुईं जो अब अस्तित्व में हैं: तारे, ग्रह, सूर्य, चंद्रमा, और पृथ्वी; महासागर, पर्वत, समुद्र, नदियाँ और घाटियाँ। हर क्षण अपने पहले क्षण का स्वाभाविक परिणाम था।

३. यह संसार सरल और पूर्वानुमेय था: नदियाँ सदियों तक अपने मार्गों में बहती रहीं, बादल हवा के साथ बहते थे, और जब वे भारी हो जाते तब वर्षा करते थे, और ग्रह, अपनी कक्षाओं में बँधे हुए, आकाश में अचेतन रूप से एक ही मार्ग को बार-बार घुमाते थे।

४. लेकिन तिरानोसेला, जीवन की शक्ति, अलग तरह से कार्य करती है। यह पूरे ब्रह्मांड में फैली हुई है, अक्सर अव्यवस्थित, लेकिन जब यह किसी आवरण या शरीर में एकत्रित होती है, तो यह चेतना का स्रोत बन सकती है।

५. जब यह किसी उपयुक्त संरचित पदार्थ में पर्याप्त मात्रा में एकत्र होती है, तो यह विचार, भावना और बुद्धि का स्रोत बन जाती है।

६. ऐसा पदार्थ, जो तिरानोसेला से परिपूर्ण होता है, अब केवल प्रकृति के नियमों के अधीन नहीं रहता, बल्कि सोचने, अनुभव करने और चेतन होने की क्षमता प्राप्त करता है। वह जीवित प्राणी बन जाता है।

७. तिरानोसेला, यद्यपि अदृश्य है, संसार को प्रभावित करती है, और संसार भी इसे प्रभावित करता है।

८. यह हर जीवित प्राणी में विद्यमान है, और जितना प्राणी उन्नत होता है, उसमें तिरानोसेला उतनी ही अधिक होती है: कीड़े उस घास से अधिक रखते हैं जिसमें वे रहते हैं, मछलियाँ कीड़ों से अधिक, सूअर मछलियों से अधिक, और मनुष्य सबसे अधिक।

९. हर मनुष्य, अपनी उत्पत्ति के क्षण से ही तिरानोसेला को अपने अंदर एकत्र करने लगता है। यह उसके शरीर के साथ जुड़ जाती है, उसके साथ बढ़ती है और उसके भीतर आकार लेती है।

१०. इसी कारण मनुष्य का मस्तिष्क विचार और भावना उत्पन्न कर सकता है; वही मनुष्य की चेतना और उसकी स्वतंत्र इच्छा का स्रोत है।

११. तिरानोसेला की संरचना मनुष्य के भीतर उसके जीवन भर विकसित होती रहती है, जब तक कि वह एक अत्यंत जटिल सत्ता न बन जाए, जिसे आत्मा कहा जाता है।

१२. इसे सामान्य पदार्थ से तुलना नहीं की जा सकती; हर नेक मानवीय जीवन किसी भी भौतिक संपत्ति से अधिक मूल्यवान है।

१३. और जो व्यक्ति किसी निर्दोष का जीवन जानबूझकर छीनता है, वह इस कर्म के लिए शाश्वत पीड़ा भोगेगा।

१४. जब किसी व्यक्ति का जीवन समाप्त होता है, और उसका भौतिक शरीर मर जाता है, तब तिरानोसेला की वह संरचना, उसकी आत्मा, बनी रहती है और अमूर्त चेतना का रूप ले लेती है।

१५. यदि वह व्यक्ति दुष्ट था, तो उसका शेष भाग, अब बिना इच्छा और इंद्रिय-सुख के, दुःख और शून्यता में गिर जाता है।

१६. वह दुर्बल, असहाय, अनन्त पीड़ा और कड़वाहट में रहता है, अपने कर्मों से यातना पाता हुआ।

१७. लेकिन यदि व्यक्ति ने कोई अक्षम्य पाप नहीं किया हो, तो उसकी आत्मा मृत्यु के बाद ब्रह्मांड में बिना पीड़ा के रह सकती है।

१८. वह एक शरीरहीन चेतना होगी, जो शुद्ध तिरानोसेला से बनी होती है।

१९. वह अब पदार्थ को नियंत्रित नहीं कर सकती, लेकिन वह जीवित प्राणियों की तिरानोसेला को प्रभावित कर सकती है।

२०. इनमें से सबसे शक्तिशाली सत्ता को पामलेनेक कहा जाता है, जो मनुष्यों की रक्षा करते हैं और जिनकी लोग श्रद्धा करते हैं।

अध्याय २

१. पामलेनेक शुभ शक्तियाँ हैं, जो शुद्ध तिरानोसेला से बनी होती हैं और सबसे शुद्ध और भले लोगों की आत्माओं से उत्पन्न हुई हैं।

२. वे लोगों की सहायता कर सकते हैं, उनका मार्गदर्शन कर सकते हैं, उन्हें सांत्वना दे सकते हैं – हालाँकि वे सीधे पदार्थ को प्रभावित नहीं कर सकते।

३. जब जीवित लोग उनकी ओर प्रार्थना करते हैं, तो वे कभी-कभी उनके मन में अपनी उपस्थिति को महसूस करवा सकते हैं, और कभी-कभी पामलेनेक कोई विचार भेजते हैं या प्रेरणा उत्पन्न करते हैं।

४. प्रत्येक प्राणी, जो तिरानोसेला से परिपूर्ण है और जीवन में भला और न्यायप्रिय रहा है, वह पामलेनेक बन सकता है। मृत्यु के बाद उसका भौतिक शरीर नष्ट हो जाता है, लेकिन वह सत्ता ब्रह्मांड में स्वतंत्र रूप से चल सकता है और जीवितों की सहायता कर सकता है।

५. वे पामलेनेक, जो पुरुषों की आत्माओं से बने हैं, उन्हें म्लेनकेरिन कहा जाता है; और वे, जो महिलाओं की आत्माओं से उत्पन्न हुए हैं, म्लेनकेरिया कहलाते हैं।

६. पामलेनेक नोरुस सबसे निम्न श्रेणी में आते हैं। वे संख्या में अधिक और शक्ति में कमज़ोर होते हैं। वे किसी भी ऐसे व्यक्ति से उत्पन्न हो सकते हैं, जो अच्छा और निष्ठावान था – जैसे वैज्ञानिक, दार्शनिक, कलाकार, सृजनकर्ता – और वे सभी, जिन्होंने किसी न किसी प्रकार से संसार को बेहतर बनाया।

७. उनमें से कई जीवितों के बीच सम्मानित होते हैं, और वे उन क्षेत्रों में सहायता करते हैं, जिनमें वे अपने जीवनकाल में श्रेष्ठ थे।

८. वे उपयोगी विचार भेज सकते हैं, समाधान के संकेत दे सकते हैं, और प्रेरणा प्रदान कर सकते हैं। जब उनसे सहायता माँगी जाती है, वे उत्तर देते हैं, और वे सदैव प्रसन्न होते हैं जब कोई जीवित व्यक्ति वही करता है, जो वे जीवन में करते थे।

९. उनसे ऊपर पामलेनेक दोरेबेन होते हैं। वे उन लोगों की आत्माओं से उत्पन्न होते हैं, जिन्होंने संकट में दूसरों की मदद की, या जो स्वयं गहरे संकट में थे और उन्हें कोई सहायता नहीं मिली।

१०. वे सभी ज़रूरतमंदों की मदद करते हैं, निराश लोगों को आशा देते हैं, और पीड़ितों को सांत्वना प्रदान करते हैं।

११. जब उनसे सहायता माँगी जाती है, या जब वे स्वयं प्रेरित होते हैं, वे पीड़ितों की आत्मा को मज़बूत बनाते हैं, विश्वास को पुनः जाग्रत करते हैं, और बुराई के बीच में ध्यान और कार्य के लिए प्रेरणा देते हैं।

१२. दोरेबेन से भी ऊपर होते हैं पामलेनेक सोंटालिस। वे सबसे शुद्ध, सबसे मासूम और सबसे अच्छे होते हैं, और उन्हें अक्सर सबसे क्रूर और अन्यायपूर्ण तरीक़े से मारा गया होता है।

१३. वे पामलेनेक, जो सोंटालिस होते हैं, वे भी भले और ज़रूरतमंद लोगों की सहायता करना चाहते हैं – क्योंकि उन्होंने स्वयं जीवन में गहरा अन्याय सहा होता है, और वे अब दूसरों की रक्षा करना चाहते हैं, जो वैसा ही सह रहे हैं।

१४. वे सभी में सबसे शक्तिशाली होते हैं। जो कोई भी व्यक्ति सच्चे मन से उनके लिए प्रार्थना करता है, वह उनकी निकटता और करुणा को महसूस कर सकता है। यद्यपि वे भौतिक संसार को सीधे प्रभावित नहीं कर सकते, फिर भी उनकी सहायता और कोमल प्रभाव प्रत्येक उस व्यक्ति को, जो उनकी ओर मुड़ता है, शक्ति और आशा प्रदान करता है – चाहे वह दुःख की घड़ी हो या सामान्य दिन।

१५. पामलेनेक को सम्मान देने का कोई एक निश्चित तरीका नहीं होता। हर एक पामलेनेक अद्वितीय होता है, और अलग-अलग लोगों की अलग-अलग परंपराएँ होती हैं।

१६. कोई निर्धारित प्रार्थनाएँ नहीं हैं, बल्कि सच्चे शब्द और अच्छे इरादे सबसे महत्वपूर्ण हैं।

१७. कई तिरानोसेलिस्ट पामलेनेकों की छोटी मूर्तियाँ बनाते हैं, जिन्हें उम्फालत कहा जाता है, और उनके माध्यम से वे प्रार्थना करते हैं।

१८. उम्फालतें बहुत बड़ी नहीं होतीं, बल्कि हाथ में समा जाती हैं, और किसी कठोर सामग्री से बनाई जाती हैं – जैसे पत्थर, लकड़ी या मिट्टी। उनकी सामग्री कोई विशेष मायने नहीं रखती।

१९. प्रत्येक उम्फालत उस पामलेनेक को दर्शाता है जैसा वह जीवन में था, या जैसा उसे कोई श्रद्धालु कल्पना करता है। कभी-कभी सिर के चारों ओर एक सफेद, नीला या पीला प्रभामंडल चित्रित किया जाता है, जो उसकी तिरानोसेला में अमरता को दर्शाता है।

२०. अग्नि के पास तेल डालने की एक विशेष विधि के बाद, जब प्रार्थना की जाती है, तो उस मूर्ति में उस पामलेनेक की तिरानोसेला का भाग प्रवेश करता है, और उसका निर्माता उसकी निकटता प्राप्त करता है।

२१. बहुत से लोग उम्फालत के पास प्रार्थना करते हैं, ताकि उस पामलेनेक के और अधिक निकट आ सकें, जिसकी वह मूर्ति है।

अध्याय ३

१. सभी पामलेनेक जीवित लोगों के बीच प्रसिद्ध नहीं होते, जैसे कि सभी अच्छे लोगों की कहानियाँ भी ज्ञात नहीं होतीं।

२. दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में विभिन्न पामलेनेक पूजित होते हैं, लेकिन कुछ की कहानियाँ दूसरों की तुलना में अधिक प्रसारित हुई हैं और वे व्यापक रूप से सम्मानित हैं।

३. सोंटालिस म्लेनकेरिया ऐलिया यूनीला एक छोटी लड़की थी, जो रोमन साम्राज्य में हज़ार साल पहले रहती थी, और आज वह सभी तिरानोसेलिस्टों के बीच सबसे सम्मानित मानी जाती है।

४. वह एक शक्तिशाली सैनिक की बेटी थी, और जब सम्राट टाइबेरियस ने उसके पिता के विश्वासघात के कारण पूरे परिवार को मरने का आदेश दिया, तो वह भी इस क्रूर भाग्य से बच नहीं सकी।

५. वह बहुत छोटी थी, और जो कुछ हो रहा था उसे समझ नहीं पाई। वह जल्लादों से दया की भीख माँगती रही, लेकिन उसकी याचना ने दुष्ट सम्राट को नहीं रोका। उसे यातना दी गई, निर्दयता से मारा गया, और उसका शव अपमानित किया गया।

६. टाइबेरियस हर नेक और न्यायप्रिय व्यक्ति की दृष्टि में दोषी है।

७. किसी शासक का कर्तव्य अपने लोगों की रक्षा करना और उनकी भलाई करना होता है।

८. जो कोई भी निर्दोष की जान लेने के लिए अपनी शक्ति का दुरुपयोग करता है, या अपने राज्य में ऐसा होने देता है – चाहे वह जीवन में दंड से बच जाए – वह मृत्यु के बाद अनंत पीड़ा भोगेगा।

९. म्लेनकेरिया यूनीला, वह मासूम बच्ची जिसने सबसे दुष्टों के योग्य भाग्य को सहा, वह बाल स्नेह और मासूमियत की पामलेनेक है – अत्याचार से पीड़ितों की रक्षक और हर भले व्यक्ति की सखी।

१०. वह दुःखी लोगों को सांत्वना देने और ज़रूरतमंदों की सहायता करने का प्रयास करती है, और जो कोई भी उसके पास प्रार्थना करता है और उसकी मदद माँगता है – वह आशा प्राप्त कर सकता है: नई शक्ति, विश्वास, और किसी भी संकट के बावजूद आगे बढ़ने का संकल्प।

११. उसका प्रमुख स्मरण दिवस शरद ऋतु के दूसरे महीने की अठारहवीं तिथि को मनाया जाता है, जिसे उसके और उसके परिवार की मृत्यु की वर्षगाँठ माना जाता है।

१२. यह शांति से सोचने, प्रार्थना करने, प्रियजनों से मिलने और भलाई फैलाने का समय है। इस दिन झगड़ों से विशेष रूप से बचा जाना चाहिए।

१३. एक अन्य प्रसिद्ध पामलेनेक म्लेनकेरिन दोरेबेन यीशु नासरी थे, जो एक यहूदी उपदेशक थे और यूनीला के समय में ही जीवित थे।

१४. उन्होंने दूसरों के प्रति प्रेम, क्षमा, निर्धनों की सहायता और सभी लोगों की समानता की शिक्षा दी।

१५. उनका जीवन यूनीला से तीन गुना अधिक लंबा था, और अंततः वे भी मारे गए, क्योंकि उनका यहूदी पुरोहितों से विवाद हो गया था।

१६. वे और उनके कई अनुयायी, जिन्होंने सदियों तक अन्याय के विरुद्ध खड़े होकर संघर्ष किया – आज सम्मानित हैं। और पामलेनेक के रूप में वे उन सभी की सहायता करते हैं जो किसी महान बुराई के विरुद्ध भले उद्देश्य के लिए लड़ते हैं, जबकि वे स्वयं दुर्बल होते हैं।

१७. सोंटालिस म्लेनकेरिया हायपेशिया अलेक्ज़ान्द्रिया की रहनेवाली थीं। वे जीवन में एक यूनानी गणितज्ञ और प्रकृति की दार्शनिक थीं।

१८. उन्होंने महान खोजें कीं और कई विद्यार्थियों को शिक्षित किया। केवल इन उपलब्धियों के कारण ही वे एक नोरुस के रूप में सम्मान पाने की पात्र थीं – जैसे कि यूक्लिड और एरतॉस्थनीज जैसे अन्य महान म्लेनकेरिन।

१९. लेकिन उनका अंत दुःखद रहा – उन्हें निर्दयता से मारा गया।

२०. यह और भी भयानक था, क्योंकि जिन्होंने उन्हें मारा, वे स्वयं को यीशु के अनुयायी मानते थे, जिन्हें भलाई और प्रेम फैलाना था – लेकिन वे अपराधी बन गए।

२१. यह मायने नहीं रखता कि वे सोचते थे कि वे उसकी इच्छा पूरी कर रहे हैं। किसी निर्दोष व्यक्ति की हत्या को कोई कारण न्यायसंगत नहीं बना सकता।

अध्याय ४

१. पामलेनेकों को विभिन्न स्थानों पर विभिन्न तरीकों से सम्मान दिया जाता है, लेकिन उनमें मौजूद अच्छाई और महानता हर जगह सराही जाती है।

२. उनके नाम पर लोगों को नुकसान पहुँचाना मना है। किसी को उनकी पूजा के लिए मजबूर करना, या किसी को उनके विश्वास को छोड़ने पर दंड देना भी वर्जित है।

३. किसी निर्दोष व्यक्ति को कोई भी प्रकार की हानि पहुँचाना निषिद्ध है – जैसे हत्या, अपहरण, चोरी, हमला, यातना या गुलामी – और ऐसा करने के लिए किसी को मजबूर करना या उकसाना भी।

४. भले लोगों का कर्तव्य है कि वे बुराई को रोकें और दोषियों को न्यायपूर्वक दंड दें। हत्यारों को मृत्यु दंड दिया जाना चाहिए, गुलाम रखनेवालों को श्रम में लगाया जाना चाहिए, और चोरों से उनकी संपत्ति छीनी जानी चाहिए।

५. किसी अपराध के लिए किसी निर्दोष को सज़ा नहीं दी जानी चाहिए, चाहे उनका आपस में कोई संबंध हो – पुत्रों को पिता के पापों

के लिए, पत्नी को पति के लिए, या प्रजा को अपने शासक के अपराधों के लिए दंड नहीं मिलना चाहिए।

६. हर निर्दोष मनुष्य का जीवन समान रूप से मूल्यवान है, चाहे वह पुरुष हो या महिला, अमीर हो या गरीब। अपराध के लिए सज़ा सबके लिए बराबर होनी चाहिए।

७. जो कोई भी किसी और की संपत्ति चुराता है, उसे उसका दुगना लौटाना चाहिए; और यदि वह उसे लौटाने में असमर्थ हो, तो उसे शपथ लेनी चाहिए कि जैसे ही वह सक्षम हो, वह चार गुना लौटाएगा।

८. हर इंसान जन्म से स्वतंत्र होने का अधिकारी है। गुलामी वर्जित है – कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे का स्वामित्व नहीं हो सकता।

९. किसी निर्दोष की जान जानबूझकर लेना, या ऐसा करने का आदेश देना, क्षमायोग्य अपराध नहीं है। जिसने यह किया हो, वह जीवन में भी पीड़ित होगा और मृत्यु के बाद शाश्वत यातना भोगेगा।

१०. बाकी सभी अपराधों को क्षमा मिल सकती है – यदि अपराधी अपना दंड भोगे, हानि की भरपाई करे, सच्चे मन से पछताए और यह संकल्प ले कि वह बदल जाएगा।

११. बच्चों को वयस्कों की तरह दंड नहीं देना चाहिए। उन्हें मृत्यु दंड नहीं दिया जा सकता।

१२. यदि कोई वयस्क पीड़ित हुआ हो, तो अपराधी को न्याय के अनुसार दंड मिलना चाहिए; लेकिन जो कोई बच्चे को नुकसान पहुँचाता है, उसे दुगना दंड मिलना चाहिए।

१३. हर बच्चे की देखभाल होनी चाहिए, चाहे उसके माता-पिता कौन हों।

१४. यदि कोई बच्चा भटका हुआ या परित्यक्त मिले, तो भले लोगों को चाहिए कि वे उसे अपनाएँ, उसे भोजन और जल दें; और यदि उसके माता-पिता न मिलें, तो उसे अपने पुत्र या पुत्री की तरह पालें।

१५. माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को अच्छाई सिखाएँ और उन्हें बुराई की भयावहता दिखाएँ।

१६. जो कोई किसी ऐसे बच्चे को, जो अभी विवेक या न्याय की भावना से विहीन है, बुराई करने के लिए प्रेरित करता है – वह ऐसा है, मानो स्वयं उसने ही वह बुराई की हो।

१७. केवल वही कर्म बुरे हैं जो किसी व्यक्ति या संसार को हानि पहुँचाते हैं। यदि किसी कार्य से किसी को कोई हानि न पहुँचे, तो उसे दंड देना अन्याय है।

१८. जो कोई दूसरों को धमकी देकर बुराई करने के लिए मजबूर करता है, वह भी वैसा ही अपराधी है जैसे कि जिसने स्वयं वह कार्य किया हो।

१९. जो लोग बुराई को आसानी से रोक सकते थे, लेकिन उन्होंने कुछ नहीं किया – उन्हें भी दंडित किया जाना चाहिए।

अध्याय ५

१. तिरानोसेलिस्ट वे सभी लोग हैं जो भले और न्यायप्रिय हैं, जो दुर्बलों की रक्षा करते हैं, बुराई के प्रति कठोर हैं, तिरानोसेला में विश्वास रखते हैं, और पामलेनेकों को सम्मान देते हैं।

२. उन्हें सदा भलाई की रक्षा करनी चाहिए और हर बुराई से संघर्ष करना चाहिए। वे इसे अनदेखा न करें और न ही अपने मन को उससे विचलित होने दें।

३. जो कोई निर्दोष व्यक्ति पर हाथ उठाता है, वह सभी तिरानोसेलिस्टों पर हाथ उठाता है।

४. जब कोई अच्छा व्यक्ति मरता है, तो उसका शरीर उसकी इच्छा, उसकी परंपरा और उसके विश्वास के अनुसार दफनाया जाना चाहिए।

५. अपराधियों के शवों को भले लोगों के शवों के पास नहीं दफनाया जाना चाहिए।

६. भले शांतिपूर्ण देशों पर हमला न करें, जहाँ न्यायप्रिय और बुद्धिमान शासक शासन करते हैं।

७. लेकिन यदि आपके पास पर्याप्त शक्ति है, तो उन देशों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करें, जहाँ अत्याचार और अराजकता फैलती है, और जहाँ शासक निर्दोषों पर अत्याचार करते हैं।

८. केवल युद्ध में दुश्मन के सैनिकों को मारें, और आत्मसमर्पण करने वालों पर दया करें।

९. बंदियों के साथ न्याय और सम्मान से व्यवहार करें। युद्ध के बाद उन्हें परखें, और यदि उन्होंने केवल आज्ञा का पालन किया हो और कोई अपराध न किया हो, तो उनके हथियार ले लें और उन्हें उनके देश वापस भेज दें।

१०. अपने न्याय में आत्मविश्वासी बनें। हज़ार अपराधियों को गलती से माफ़ कर देना बेहतर है, बजाय इसके कि एक निर्दोष को अन्यायपूर्ण रूप से मार दिया जाए।

११. दुश्मन देशों की महिलाओं और बच्चों को हानि न पहुँचाएँ। उन्हें अधिग्रहीत भूमि में शांति से जीने दिया जाए।

१२. जो कोई युद्ध में किसी निर्दोष को नुकसान पहुँचाता है, वह वैसा ही है जैसे उसने अपने ही लोगों को चोट पहुँचाई हो।

१३. युद्ध में और युद्ध के बाद, सभी अनाथ बच्चों की देखभाल करें; और जिन बच्चों के पिता मारे गए हैं, उन्हें उनकी माँ के पास रहने दिया जाए।

१४. याद रखें कि हर मानवीय जीवन समान रूप से मूल्यवान है, चाहे उसकी भूमिका या स्थान कुछ भी हो। पुरुष और महिला – दोनों की बातों को एक समान महत्व मिलना चाहिए।

१५. किसी भी जीवित प्राणी की बलि न चढ़ाएँ – पामलेनेक इससे प्रसन्न नहीं होते।

१६. यदि आप चाहें, तो उन पामलेनेकों की छोटी मूर्तियाँ बना सकते हैं जिन्हें आप श्रद्धा से पूजते हैं। उन्हें स्वयं अपने हाथों से बनाएँ, और किसी से न खरीदें।

१७. पामलेनेक आपके द्वारा उनके लिए समर्पित समय से अधिक प्रसन्न होते हैं, न कि सोने या चाँदी से। धन को ज़रूरतमंदों की सहायता में व्यय करें।

१८. किसी को तिरानोसेलिज्म अपनाने के लिए बाध्य न करें, लेकिन यदि कोई अविश्वासी स्वयं इसे अपनाना चाहे, तो उसे अपनाएँ और उसे सिखाएँ।

१९. यदि कोई तिरानोसेलिस्ट पुरुष किसी अन्य धर्म की महिला से प्रेम करता है, तो वह उससे विवाह कर सकता है – यदि वह स्त्री दुष्ट न हो और उसका धर्म निर्दयी न हो।

२०. इसी प्रकार, यदि कोई तिरानोसेलिस्ट महिला किसी अविश्वासी पुरुष से प्रेम करती है, तो वह उससे विवाह कर सकती है – यदि वह पुरुष अच्छा और न्यायप्रिय हो, और उसके रीति-रिवाज क्रूर न हों।

२१. अपने बच्चों को भलाई और न्याय की भावना से पालें। उन्हें तिरानोसेलिज्म सिखाएँ और कहानियाँ सुनाएँ, ताकि वे अच्छाई और बुराई में अंतर करना जानें।